रमज़ान से लाभान्वित पाठ

﴿الدروس المستفادة من رمضان﴾

[हिन्दी – **Hindi** – هندي]

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2009 - 1430

islamhouse.com

﴿ الدروس المستفادة من رمضان ﴾

« باللغة الهندية »

عطاء الرحمن ضياء الله

2009 - 1430

islamhouse.com

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दया शील अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने मन की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। अल्लाह की प्रशंसा और स्तुति के बाद :

रमज़ान से लाभान्वित पाठ

१. रमज़ान सब्र (धैर्य) का महीना है :

सब्र अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है 'रोकना', और 'सौम' अर्थात् रोज़ा का नाम सब्र इस लिए रखा गया है क्योंकि सौम (रोज़ा) सब्र का एक प्रकार है।

अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿وَٱسْتَعِينُوا۟ بِٱلصَّبْرِ وَٱلصَّلَوٰةِ﴾ [البقرة:٤٥].

''सब्र और नमाज़ के द्वारा सहायता प्राप्त करो।'' (सूरतुल बक़राः 45)

सुप्रसिद्ध भाष्यकार इब्ने जरीर तब्री कहते हैं : ''एक कथन के अनुसार : इस स्थान पर सब्र का अर्थ 'सौम' (रोज़ा) है, और सौम हमारे निकट सब्र का कुछ अर्थ है।'' (तफसीर तब्री 1/259)

रमज़ान और सब्र :

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने कहा : मैं ने अल्लाह के पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुये सुना कि :

« شَهْرُ الصَّبْرِ وَثَلاَثَةُ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ صَوْمُ الدَّهْرِ »

''सब्र के महीने और हर महीने में तीन दिन का रोज़ा ज़माने भर का रोज़ा है।'' (नसाई ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सहीह कहा है, देखियेः सहीह सुनन नसाई :2408)

अल्लामा सुयूती कहते हैं : ''सब्र के महीना से अभिप्राय रमज़ान का महीना है, और सब्र का मूल अर्थ होता है रोकना, अतः सौम का नाम सब्र इस लिए रखा गया है कि उस में खाने, पीने और कामवासना से मन को रोकना पाया जाता है।'' (शरह सुनन नसाई 4/218)

रमज़ान का महीना सब्र सीखने का पाठशाला है :

इब्ने रजब कहते हैं : ''सब्र का सर्वश्रेष्ठ प्रकार रोज़ा है, क्योंकि यह अपने अंदर सब्र के तीनों भेदों को समोये हुये है; इसलिए कि रोज़ा अल्लाह तआला के आज्ञापालन पर सब्र करना, तथा अल्लाह तआला की अवज्ञा करने से सब्र करना (रूकना) है, क्योंकि बन्दा अल्लाह तआला के लिए अपनी शहवतों को त्याग देता है जबकि उसका मन उसे उनकी ओर खींच रहा होता है, इसीलिए सहीह हदीस में आया है कि अल्लाह अज़्ज़ा व

जल्ल फरमाता है : ''आदम की संतान (मनुष्य) का प्रत्येक अमल उसी के लिए है सिवाय रोज़ा के, क्योंकि वह मेरे ही लिए है, और मैं ही उसका बदला दूँगा, उसने मेरे कारण अपनी शहवत (कामवासना), और अपना खाना–पानी छोड़ दिया।'' (सहीह बुखारी हदीस संख्याः 1805, सहीह मुस्लिम हदीस संख्याः 1151)

तथा उस में कष्टदायक भाग्यों पर सब्र करना भी पाया जाता है, क्योंकि कभी कभार रोज़ादार भूख और प्यास से पीड़ित होता है, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रोज़े के महीना को सब्र के महीना की संज्ञा देते थे।'' (जामिउल उलूम वल हिकम 1/26)

सब्र के प्रकार :

इब्ने क़ैयिम फरमाते हैं : ''सब्र के उस से संबंधित चीज़ों के एतिबार से तीन प्रकार हैं : आदेशों और नेकियों पर सब्र करना यहाँ तक कि उनको संपन्न कर लेना, निषेद्धों और अवज्ञा से सब्र करना (रूक जाना) और उन में न पड़ना, भाग्यों और फैसलों पर सब्र करना यहाँ तक कि उन पर क्रोध न प्रकट करना।'' (मदारिजुस्सालिकीन 2/165)

२. रमज़ान दानशीलता, एहसान व भलाई और सिला–रहमी (रिश्तेदारी निभाने) का महीना है :

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं:

''अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों में सब से बढ़ कर दानशील थे, और आपकी सखावत (दानशीलता) रमज़ान में उस समय सब से अधिक उफान पर होती थी जब जिब्रील आप से मुलाक़ात करते थे, और जिब्रील आप से रमज़ान की हर रात में मुलाक़ात करते थे और आप

को कुरआन का दौर (पुनः अवकोलन) कराते थे, उस समय पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खैर व भलाई की सखावत में तेज़ हवा से भी आगे होत थे।'' (सहीह बुखारी हदीस संख्या:6 व सहीह मुस्लिम हदीस संख्या:2308)

दानशीलता, एहसान व भलाई और सिला–रहमी (रिश्तेदारी निभाने) के कुछ क्षेत्र निम्नलिखित है :

1. रोज़ेदार को इफ्तार कराना :

ज़ैद बिन खालिद अल–जोहनी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने कहा कि : अल्लाह के पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जिस ने किसी रोज़ेदार को इफ्तार करवाया तो उसके लिए उस (रोज़ादार) के समान अज्र व सवाब है, जबकि रोज़ेदार के अज्र व सवाब में कोई कमी नहीं की जायेगी।'' (तिर्मिज़ी हदीस संख्याः 807, इब्ने माजा हदीस संख्या:1746, तिर्मिज़ी ने इसे हसन सहीह कहा है, और अल्बानी सहीह कहा है)

2. माता–पिता के साथ एहसान व भलाई करना और रिश्तेदारी निभानाः

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने कहाः एक आदमी अल्लाह के पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और कहाः मेरी अच्छी संगत का सबसे अधिक हक़दार कौन है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः ''तेरी माँ'', उसने कहाः फिर कौन? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः ''फिर तेरी माँ'', उसने कहाः फिर कौन? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः ''फिर तेरी माँ'' उस ने कहाः फिर कौन? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः ''फिर तेरा बाप।'' (बुखारी हदीस संख्याः 5971, सहीह मुस्लिम हदीस संख्याः 2548)

अनस बिन मालिक से वर्णित है कि उन्हों ने कहाः मैं ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुये सुना कि : ''जो आदमी इस बात से प्रसन्न हो कि उसकी जीविका (रोज़ी) विस्तृत कर दी जाये, और उसकी मृत्यु में विलंब कर दिया जाये (अर्थात् आयु बढ़ा दी जाये) तो वह अपने रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करे।'' (बुखारी हदीस संख्याः 5985, सहीह मुस्लिम हदीस संख्याः 2557)

हदीस में रोज़ी बढ़ाने से मुराद उसमें विस्तार और वृद्धि किया जाना है, या उस से अभिप्राय उसमें बरकत है। इसी प्रकार आयु में वृद्धि से अभिप्राय उसमें बरकत का होना है इस प्रकार कि आदमी को नेकी करने, अपने समय को परलोक में लाभ पहुँचाने वाले कामों में लगाने और उसे व्यर्थ में नष्ट होने से बचाने की तौफीक़ हासिल हो। तथा एक कथन के अनुसार इस से वास्तविक वृद्धि मुराद है।

3. सदक़ा व खैरात और इसके अलावा अन्य भलाई के कामः

अबू हुरैरा रज़ियल्लाह अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने कहा कि अल्लाह के पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः ''प्रत्येक दिन जिस में सूरज उगता है, आदमी के हर जोड़ पर सदक़ा है, तुम्हारा दो आदमियों के बीच न्याय करना सदक़ा है, तुम किसी आदमी की उसके जानवर (सवारी) पर सवार होने में सहायता कर दो, या तुम उस पर उसका सामान लाद दो तो यह भी सदक़ा है, भली बात कहना सदक़ा है, नमाज़ की ओर जाते हुए तुम्हारा हर क़दम सदक़ा है, और तुम्हारा रास्ते से कष्ट पहुँचाने वाली चीज़ को हटा देना सदक़ा है।'' (सहीह बुखारी हदीस संख्याः 2989, सहीह मुस्लिम हदीस संख्याः 1009, हदीस के शब्द मुस्लिम के हैं।)

उक्त हदीस में सदक़ा से मुराद ऐच्छिक और मुस्तहब सदक़ा है, अनिवार्य और लाज़मी सदक़ा नहीं है, जैसाकि इमाम नववी ने विद्वानों का कथन उल्लेख किया है।

३. रमज़ान जिहाद, विजय और फुतूहात का महीना है:

चुनाँचि इस्लामी इतिहास में अनेक निर्णायक युद्ध इसी महीने में घटित हुये, जिनमें मुसलमानों को स्पष्ट विजय प्राप्त हुई :

1. बद्र का महान युद्ध :

अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿وَمَا أَنزَلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ ٱلْفُرْقَانِ يَوْمَ ٱلْتَقَى ٱلْجَمْعَانِ﴾ [الأنفال:٤١]

''और जो कुछ हम ने अपने बन्दे पर फुरक़ान (बद्र के युद्ध) के दिन उतारा जिस दिन दोनों जत्थों का मुठभेड़ हुआ।'' (सूरतुल अन्फालः 41)

उरवा बिन ज़ुबैर अल्लाह तआला के फरमान ﴾फुरक़ान के दिन﴿ के बारे में कहते हैं : जिस दिन अल्लाह तआला ने सत्य और असत्य के बीच अन्तर स्पष्ट कर दिया, और वह बद्र का दिन है, और वह पहली लड़ाई है जिस में अल्लाह के पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उपस्थित हुए, और मुशरेकीन का सरदार उत्बा बिन रबीआ था, रमज़ान के महीने की 19 तारीख को जुमुआ के दिन उनका एक दूसरे से मुठभेड़ हुआ, अल्लाह के पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों की संख्या 313 थी, जबकि मुशरिकों की संख्या 900 से 1000 के बीच थी, अल्लाह तआला ने उस दिन मुशरिकों को पराजित कर

दिया, और उन में से सत्तर से अधिक लोग मारे गये और बन्दी बनाये गये।'' (तफसीर तब्री 10/9)

2. मक्का की विजय (फत्हे–मक्का)

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना आने के साढ़े आठ साल पूरे होन पर दस हज़ार लोगों के साथ मदीना से निकले, चुनाँचि आप अपने साथ मुसलमानों को लेकर मक्का की ओर रवाना हुये, आप रोज़ा रखत थे और लोग भी रोज़ा रखते थे यहाँ तक कि आप कदीद –उसफान और कुदैद के बीच एक चश्मा है– तक पहुँचे, तो रोज़ा तोड़ दिया और लोगों ने भी रोज़ा तोड़ दिया।'' (बुखारी हदीस संख्याः 4276)

तथा इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से ही वर्णित है कि अल्लाह के पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फत्हे मक्का का युद्ध रमज़ान के महीने में किया।'' (बुखारी हदीस संख्याः 4275)

3. ऐन जालूत :

ऐन जालूत की लड़ाई 25 रमज़ानुल मुबारक 658 हिज्री में हलाकू की सरबराही में तातारी फौजों और मिस्र के ममालीक की फौजों की बीच हुई जिसके सरबराह शाह मुज़फ्फर कुतुज़ थे। इस लड़ाई में मुसलमानों को तातारियों पर विजय प्राप्त हुई।

4. शक़्हब की लड़ाई :

यह लड़ाई शनिवार के दिन प्रथम रमज़ान 702 हिज्री में तातारियों और मुसलमानों के बीच घटित हुई और दूसरे दिन तक जारी रही, इस लड़ाई में शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या रहिमहुल्लाह ने भाग लिया, इसमें मुसलमानों की जीत हुई।

इब्ने कसीर कहते हैं : ''इब्ने तैमिय्या ने बादशाह को लड़ाई पर उभारा और उसे विजय की शुभ–सूचना दी, आप अल्लाह की क़सम खा कर उसे यक़ीन दिलाते कि इस लड़ाई में उनकी जीत होगी। तथा उन्हों ने लोगों को लड़ाई के दौरान रोज़ा तोड़ने का फत्वा दिया और स्वयं भी रोज़ा तोड़ दिया, वह अमीरों और फौजियों के पास जाते और अपने हाथ में मौजूद कोई चीज़ खाते, ताकि उन्हें इस बात से अवगत करायें कि उनका लड़ाई करने पर शक्ति जुटाने के लिए रोज़ा तोड़ देना बेहतर है, तो फिर लोग भी खाते थे। (इस लड़ाई के बारे विस्तार रूप से जानने के लिए इब्ने कसीर की अल–बिदाया वन्निहाया : 18/26)

4. रमज़ान क़ुरआन और क़ियामुल्लैल का महीना है :

क़ुरआन और रमज़ानः

अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ﴾ (سورة البقرة:١٨٥)

''रमज़ान का महीना वह है जिस में क़ुर्आन उतारा गया, जो लोगों के लिए मार्गदर्शक है और जिसमें मार्गदर्शन की और सत्य तथा असत्य के बीच अन्तर की निशानियाँ हैं।'' (सूरतुल–बक़रा:185)

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि उन्हों ने कहाः ''सम्पूर्ण क़ुर्आन एक ही बार में रमज़ान के महीने में शबे–क़द्र में आसमाने दुनिया पर उतारा गया।'' (तफसीर तब्री 2/145)

फिर थोड़ा–थोड़ा कर के 23 वर्ष में पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर पूरा क़ुर्आन उतरा, जिसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों को लिखवाते रहते थे और वह विभिन्न तख्तियों, हड्डियो और चमड़ों पर लिखा हुआ था। फिर अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी खिलाफत की अवधि में सम्पूर्ण क़ुर्आन को एक किताब में एकत्र करवाया और फिर उसी नुस्खे से उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी खिलाफत के समय सात कापियाँ तैयार करवाईं और उसे विभिन्न नगरों में भेज कर उसी के अनुसार क़ुरआन को पढ़ने का आदेश दिया।

तथा इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैंः अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों में सब से बढ़ कर दानशील थे, और आपकी दानशीलता रमज़ान में उस समय सब से अधिक उफान पर होती थी जब जिब्रील आप से मुलाक़ात करते थे, और जिब्रील आप से रमज़ान की हर रात में मुलाक़ात करते थे और आप को क़ुर्आन का दौर (पुनः अवकोलन) कराते थे, उस समय पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खैर व भलाई की सखावत में तेज़ हवा से भी आगे होत थे। (सहीह बुखारी हदीस संख्याः 6 व सहीह मुस्लिम हदीस संख्याः 2308)

इमाम नववी कहते हैं कि : ''इस हदीस से जो अहकाम सिद्ध होते हैं उन्ही में से एक यह है कि : इस मुबारक महीने में क़ुरआन का पाठ करना और उसे दोहराना मुस्तहब है।'' (शरह मुस्लिम 15/69)

हाफिज़ इब्ने हजर कहते हैं : ''इस हदीस से निष्कर्षित फायदे यह हैं : रमज़ान के महीने की महानता क्योंकि इसी महीने में क़ुरआन के उतरने का आरम्भ हुआ, फिर क़ुरआन का जो हिस्सा उतर चुका होता था उसे इसी महीने में दोहराया जाता था, जिसका आवश्यक अर्थ यह निकला कि इस महीने में जिब्रील अलैहिस्सलाम अधिक से अधिक बार उतरते थे, और

उनके अधिकता से उतरने में असंख्य भलाईयाँ और बरकतों का आगमन है। तथा इस हदीस से पता चलता है कि : समय की प्रतिष्ठा और विशेषता अधिक इबादत करने से प्राप्त होती है, तथा यह भी ज्ञात हुआ कि निरंतरता से कुरआन की तिलावत करना भलाई में वृद्धि का कारण है, तथा इस से यह भी पता चला कि अंतिम आयु में अधिक इबादत करना मुस्तहब है . . . तथा यह कि रमज़ान की रातें उसके दिन से सर्वश्रेष्ठ हैं, तथा कुरआन की तिलावत का उद्देश्य ध्यान के साथ और समझ कर पढ़ना है; क्योंकि रात ही इसका स्थान है, जबकि दिन में व्यस्तता और दुनियावी रूकावटें होती हैं।'' (फत्हुलबारी 9/45)

रमज़ान के महीने में कुरआन की तिलावत में सलफ सालेहीन (पूर्वजों) के संघर्ष के कुछ दृश्य :

इब्राहीम नखई कहते हैं : अस्वद रमज़ान के महीने में हर दो रातों में कुरआन खत्म करते थे, तथा वह मग्रिब और इशा के बीच में सोते थे, और रमज़ान के अलावा में हर छः रातो में कुरआन खत्म करते थे।'' (सियर आलामिन्नुबला 4/51)

तथा सलाम बिन अबू मुतीअ् कहते हैं : ''क़तादा सात रातों में कुरआन खत्म करते थे, और जब रमज़ान का महीना आता तो हर तीन रातों में कुरआन खत्म करते थे, और जब अंतिम दस रातें आतीं तो हर रात में कुरआन खत्म करते थे।'' (सियर आलामिन्नुबला 5/276)

रबीअ् बिन सलमान कहते हैं : ''इमाम शाफेई रमज़ान के महीने में साठ बार कुरआन खत्म करते थे।'' (सियर आलामिन्नुबला 10/36)

तथा मूसा बिन मुआविया कहते हैं : ''मैं ने क़ैरवान से प्रस्थान किया और मैं बहलूल बिन राशिद से अधिक परहेज़गार (खशीयते–इलाही वाला) किसी

को नहीं समझता था, यहाँ तक कि मेरी मुलाक़ात वकीअ् से हुई, वह रमज़ान में रात को एक बार पूरा क़ुरआन और एक तिहाई क़ुरआन पढ़ते थे, और चाश्त के समय 12 रक्अत पढ़ते थे, तथा ज़ुह्र से अस्र तक नमाज़ पढ़ते थे।'' (सियर आलामिन्नुबला 13/109)

तथा मुहम्मद बिन ज़ुहैर बिन मुहम्मद कहते हैं कि : मेरे पिता रमज़ान के महीने में क़ुरआन खत्म करने के समय हमें हर दिन व रात में तीन बार एकत्र करते थे, वह रमज़ान में नव्वे (90) बार क़ुरआन खत्म करते थे।'' (सियर आलामिन्नुबला 12/361)

तथा मुसब्बिह बिन सईद कहते हैं : ''मुहम्मद बिन इसमाईल –बुखारी– रमज़ान के महीने में दिन के समय हर दिन एक बार क़ुरआन खत्म करते थे, और तरावीह के बाद हर तीन रातों में एक बार क़ुरआन खत्म करते थे।'' (सियर आलामिन्नुबला 12/439)

क़ियामुल्लैल और रमज़ान :

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

«من قام رمضان إيماناً واحتساباً غفر له ما تقدم من ذنبه»

''जिस ने ईमान के साथ और अज्र व सवाब (पुन्य) प्राप्त करने की नीयत से रमज़ान में क़ियामुल्लैल किया, उसके पिछले गुनाह क्षमा कर दिये जायेंगे।'' (सहीह बुखारी हदीस संख्याः 37, मुस्लिम हदीस संख्याः 759)

इब्ने हजर कहते हैं : ''अर्थात् उसकी रातों को नमाज़ पढ़ते हुये बिताया, तथा क़ियामुल्लैल से मुराद यह है जिस से सामान्य रूप से क़ियाम करना हासिल हो जाये।'' (फत्हुल बारी 4/251)

इमाम नववी कहते हैं : ''इमान के साथ'' का अर्थ यह है कि इस बात की पुीष्ट करते हुये कि वइ सत्य है और उसकी फज़ीलत को चाहते हुये, तथा एहतिसाब का अर्थ यह है कि केवल अल्लाह तआला का इरादा हो, लोगों को दिखाना का उद्देश्य न हो, और न ही इसके अलावा इख्लास के विरूद्ध अन्य चीज़ें हों, तथा रमज़ान के क़ियाम से मुराद तरावीह की नमाज़ है।'' (शरह मुस्लिम 6/39)

रमज़ान के क़ियाम में सलफ सालेहीन के संघर्ष की एक झलकः

अली इब्नुल मदीनी कहते हैं : ''सुवैद बिन ग़फला रमज़ान के महीने में क़ियामुल्लैल (तरावीह) में हमारी इमामत करते थे, जबकि वह 120 वर्ष के हो चुके थे।'' (सियर आलामुन्नुबला 4/72)

५. रमज़ान भाईचारा और प्रेम का महीना हैः

लोगों के दिल प्राकृतिक और स्वभाविक रूप से उस आदमी से प्रेम करते हैं जो उनके साथ एसान व भलाई करता है, रमज़ान के महीने में भाईचारा और प्रेम का एक स्पष्ट दृश्य रोज़ेदारों को इफ्तारी करवाना और उन्हें भोजन करवाना है, इसी उद्देश्य से इस्लामी शरीअत ने इस पर उभारा और बल दिया है :

ज़ैद बिन खालिद अल–जोहनी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने कहा कि : अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जिस ने किसी रोज़ेदार को इफ्तार करवाया तो उसके लिए उस (रोज़ादार) के समान अज्र व सवाब है, जबकि रोज़ेदार के अज्र व सवाब में कोई कमी नहीं की जायेगी।'' (तिर्मिज़ी हदीस संख्याः 807, इब्ने माजा हदीस संख्याः 1746, तिर्मिज़ी ने इसे हसन सहीह कहा है, और अल्बानी ने सहीह कहा है)

इसी प्रकार ज़कातुल फित्र निकालना भी इस का एक दृश्य है :

इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि उन्हों ने फरमाया कि : ''अल्लाह के पैग़बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ग़ुलाम और आज़ाद, मर्द और और औरत, तथा छोटे और बड़े हर मुसलमान पर एक साअ की मात्रा में खजूर या जौ ज़कातुल फित्र अनिवार्य किया है, और उसे लोगों के ईद की नमाज़ के लिए निकलने से पहले अदा करने का आदेश दिया है।'' (सहीह बुखारी हदीस संख्याः 1503, मुस्लिम हदीस संख्याः 986)

६. रमज़ान गुनाहों की माफ़ी और नरक से मुक्ति का महीना है :

यह तत्व तीन कामों के द्वारा प्रदर्शित होता है :

1. ईमान के साथ और अज्र व सवाब की आशा रखते हुये रमज़ान के महीने का रोज़ा रखना।
2. ईमान के साथ और अज्र व सवाब की आशा रखते हुये रमज़ान के महीने में क़ियामुल्लैल करना (तरावीह पढ़ना)।
3. ईमान के साथ और अज्र व सवाब की आशा रखते हुये लैलतुल–क़द्र (शबे–क़द्र) में अल्लाह की इबादत करना।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

((من صام رمضان إيماناً واحتساباً غفر له ما تقدم من ذنبه، ومن قام ليلة القدر إيماناً واحتساباً غفر له ما تقدم من ذنبه))

''जिस ने ईमान के साथ और अज्र व सवाब (पुन्य) प्राप्त करने की नीयत से रमज़ान का रोज़ा रखा, उसके पिछले गुनाह क्षमा कर दिये

जयेंगे, और जिस ने ईमान के साथ और अज्र व सवाब की आशा रखते हुये लैलतुल–क़द्र (शबे–क़द्र) में अल्लाह की इबादत की, उसके पिछले गुनाह माफ कर दिये जायेंगे।'' (सहीह बुखारी हदीस संख्याः 1901, मुस्लिम हदीस संख्याः 760)

तथा अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ही से वर्णित है कि अल्लाह के पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

«من قام رمضان إيماناً واحتساباً غفر له ما تقدم من ذنبه»

''जिस ने ईमान के साथ और अज्र व सवाब (पुन्य) प्राप्त करने की नीयत से रमज़ान में क़ियामुल्लैल किया, उसके पिछले गुनाह क्षमा कर दिये जयेंगे।'' (सहीह बुखारी हदीस संख्याः 37, मुस्लिम हदीस संख्याः 759)

तथा अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

« إِذَا كَانَ أَوَّلُ لَيْلَةٍ مِنْ شَهْرِ رَمَضَانَ صُفِّدَتِ الشَّيَاطِينُ وَمَرَدَةُ الْجِنِّ وَغُلِّقَتْ أَبْوَابُ النَّارِ فَلَمْ يُفْتَحْ مِنْهَا بَابٌ وَفُتِّحَتْ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ فَلَمْ يُغْلَقْ مِنْهَا بَابٌ وَيُنَادِى مُنَادٍ يَا بَاغِىَ الْخَيْرِ أَقْبِلْ وَيَا بَاغِىَ الشَّرِّ أَقْصِرْ وَلِلَّهِ عُتَقَاءُ مِنَ النَّارِ وَذَلِكَ كُلَّ لَيْلَةٍ »

''जब रमज़ान के महीने की पहली रात होती है तो शैतान और दुष्ट जिन जकड़ दिये जाते हैं, नरक के द्वार बंद कर दिये जाते हैं चुनाँचि उस में से कोई द्वार नहीं खोला जाता, और स्वर्ग के द्वार खोल दिये जाते हैं चुनाँचि उस में से कोई द्वारा बंद नहीं किया जाता, और एक पुकारने वाला

पुकारता है : ऐ भलाई के अभिलाषी! आगे बढ़, और ऐ बुराई के चाहने वाले! रूक जा, और अल्लाह तआला के ढेर सारे नरक से मुक्त कर दिये गये बंदे होते है, और यह रमज़ान की हर रात में होता है।'' (इसे तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सहीह कहा है, देखिये : सहीह तिर्मिज़ीः 682 और सहीह इब्ने माजाः 1642)

७. रमज़ान तौबा और तक्वा का महीना है :

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

''जब रमज़ान आता है तो जन्नत के द्वार खोल दिये जाते हैं, और जहन्नम के द्वार बंद कर दिये जाते हैं, और शैतान जकड़ दिये जाते हैं।'' (सहीह मुस्लिम हदीस संख्या :1079)

क़ाज़ी अयाज़ कहते हैं : संभव है कि जन्नके द्वार खोले जाने का मतलब यह हो कि अल्लाह तआला अपने बन्दों के लिए इस महीने में ऐसी नेकियों के द्वार खोल देता है जो सामान्यतः दूसरे महीनों में नहीं होती हैं जैसेकि रोज़ा, तरावीह की नमाज़, भलाईयों का करना और बहुत सारे निषेद्ध कामों से रूक जाना, और ये सब जन्नत में प्रवेश पाने के कारणों में से हैं, इसी प्रकार जहन्नम के द्वार बंद किये जाने और शैतानों को जकड़ दिये जाने का अभिप्राय यह है कि लोग मुखालफात और शरीअत के विरूद्ध कामों से रूक जाते हैं।'' (शरह मुस्लिम 7/188)

रमज़ान पापियों के लिए तौबा का एक बहुमूल्य अवसर है :

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने कहा किः अल्लाह के पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''उस आदमी की नाक मिट्टी में सने जिस के पास मेरा चर्चा हो और वह मेरे ऊपर दरूद न

भेजे, तथा उस आदमी की नाक भी मिट्टी में सने जिस पर रमज़ान का महीना आये, फिर उसके गुनाहों के क्षमा किये जाने से पहले वह गुज़र जाये, और उस आदमी की नाक भी खाक आलूद हो जो अपने माँ–बाप को बुढ़ापे में पाये और वे दोनों उसे जन्नत में प्रवेष न दिला सकें।'' (तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और अल्बानी ने हसन सहीह कहा है, सहीह तिर्मिज़ीः 3545)

रमज़ान गुनाहों के कफ्फारा का मौसम है :

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाया करते थे कि : ''पाँचो नमाज़ें, और एक जुमुआ से दूसरा जुमुआ, और एक रमज़ान से दूसरा रमज़ान इनके बीच के गुनाहों का कफ्फारा है जबकि कबीरा गुनाहों (घोर पाप) से बचा जाये।'' (सहीह मुस्लिम हदीस संख्याः 333)

रमज़ान तक़्वा (ईश्भय) पर अभ्यास का एक पाठशाला है, और यह रोज़े के वैध किये जाने की हिक्मतों में से एक हिक्मत है :

अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ﴾ [البقرة:١٨٣].

''ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े रखना अनिवार्य किया गया है जिस प्रकार तुम से पूर्व लोगों पर अनिवार्य किया गया था, ताकि तुम संयम और भय अनुभव करो।'' (सूरतुल बक़राः 183)

हाफिज़ इब्ने कसीर कहते हैं : ﴿ताकि तुम संयम और ईश्भय अनुभव करो﴾ क्योंकि रोज़ा में शरीर की पवित्रता और शैतान के रास्तों को तंग करना है, इसीलिए सहीह बुखारी व मुस्लिम में प्रमाणित है कि : ऐ नौजवानों की जमाअत! तुम में से जो आदमी शादी की ताक़त रखता है उसे शादी करना चाहिए, और जो इसकी ताक़त नहीं रखता है, वह रोज़ा रखे; क्योंकि यह उसके शह्वत को कम करने वाला है।'' (सहीह बुखारी हदीस संख्याः 5065, मुस्लिम हदीस संख्याः 1400) (तफसीर इब्ने कसीर 1/219)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने कहा कि अल्लाह के पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

''जो व्यक्ति झूठी बात कहने और झूठ पर अमल करने और मूर्खता से न बचे तो अल्लाह तआला को इस बात की कोई आवश्यकता नहीं है कि वह अपना खाना पानी त्याग कर दे।'' (सहीह बुखारी हदीस न॰ 1903)

इसका अभिप्राय यह है कि जो आदमी रोज़ा रखते हुये झूठ से नहीं बचता है और निषिद्ध (हराम) बातों और कामों से अपने रोज़े को सुरक्षित नहीं रखता है, तो उसका रोज़ा स्वीकार नहीं किया जायेगा और उसका जो अज्र व सवाब है, उस से वह वंचित रहेगा; क्योंकि रोज़े का मूल उद्देश्य अर्थात ईश्भय की प्राप्ति में वह असफल रहा।

८. रमज़ान इख़्लास और सच्चाई का महीना है :

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने कहा कि अल्लाह के पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

''आदम के बेटे (मनुष्य) का प्रत्येक अमल कई गुना कर दिया जाता है, एक नेकी का बदला दस गुना से सात सौ गुना तक मिलता है, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का फरमान है : सिवाय रोज़ा के, क्योंकि वह (ख़ालिस) मेरे ही लिये और मैं ही उसका (विशिष्ट) बदला दूँगा, वह मेरे कारण अपनी शह्वत (कामवासना) को त्याग कर देता है, रोज़ेदार के लिए दो खुशियाँ हैं : एक खुशी रोज़ा इफ्तार के समय है, और दूसरी खुशी अपने रब से मुलाक़ात के समय होगी, और उसके मुँह की महक अल्लाह के निकट कस्तूरी से भी अधिक अच्छी है।'' (सहीह बुखारी हदीस संख्या: 5927, मुस्लिम हदीस संख्या: 1151)

कुर्तुबी कहते हैं : ''जब मामला यह है कि आमाल के अंदर रियाकारी दाखिल हो जाती है, और रोज़े से, मात्र उसके रखने से, अल्लाह के अलावा कोई अवगत नहीं होता है, तो अल्लाह तआला ने उसे अपने आप से संबंधित किया है, इसीलिए इस हदीस में फरमाया: ''वह अपनी शह्वत को मेरे कारण त्याग देता है।'' (देखिये : फत्हुलबारी 4/107)

सलफ सालेहीन के इख़्लास की एक झलक :

फल्लास कहते हैं : ''मैं ने इब्ने अदी को कहते हुये सुना: ''दाऊद बिन अबू हिन्द ने चालीस साल इस तरह से रोज़ा रखा कि उनके घर वालों को पता नहीं चलता, वह एक रेशम विक्रेता थे अपना भोजन साथ में लेकर जाते और रास्ते में उसे दान कर देते थे।'' (सियर आलामुन्नुबला 6/378)